युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज के 51वीं एवं राष्ट्रसंत
महंत अवेद्यनाथ जी महाराज के 6वीं पुण्यतिथि
के उपलक्ष्य में आयोजित

प्रेस विज्ञप्ति

श्रीरामकथा ज्ञान-यज्ञ

गोरखपुर 01 सितम्बर, 2020। गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर में युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज जी की पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित वाल्मीकि रामायण पर आधारित संगीतमय रामकथा के दूसरे दिन कथा व्यास अनन्त श्री विभूषित जगतगुरु स्वामी रामानुजाचार्य श्री राघवाचार्य जी महाराज ने कहा कि जिस प्रकार सूर्य अंधकार को नष्ट कर देता है उसी प्रकार रघुनन्दन भगवान श्रीराम हमारे दुखों को नष्ट हमेशा के लिए कर देते हैं। रामायण कथा भगवान के गुणों को प्रकाशित करती है। भूमंडल पर भगवान प्रकट होते हैं तब उनकी कथा होती है। पृथ्वी पर जब धर्म की हानि होने लगती है तब दुष्टों के संहार के लिए भगवान को बैकुंठ से उतर कर यहां आना पड़ता है। भगवान जो रावण कुंभकरण शिशुपाल कंस जैसे असुरों को अपने संकल्प मात्र से उत्पन्न कर सकते हैं वह उन असुरों को अपने संकल्प मात्र से समाप्त भी कर सकते हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण सृष्टि भगवान संकल्प पर आश्रित है। प्रलय काल में संपूर्ण सृष्टि भगवान के संकल्प मात्र से समाप्त हो कर लय को प्राप्त हो जाती है उन असुरों को समाप्त करने के लिए भगवान पृथ्वी पर केवल नहीं आते अपितु सज्जनों महापुरुषों तथा धर्म की रक्षा के लिए भगवान का अवतरण इस पृथ्वी लोक में होता है।

कथा व्यास ने कहा कि भगवान के अनंत गुण हैं माधुरता, सहृदयता, करुणा, उदारता, वीरता, सत्य, काम, सत, संकल्प, कृतित्व, अधीरता, पराक्रम इत्यादि भगवान के दिव्य गुण कहे गए हैं। यदि भगवान बैकुंठ में ही सदा बने रहे अवतार लेकर के इस धरा मंडल पर ना आवे तो यह सब भगवान के दिव्य गुण व्यर्थ हो जाएंगे भगवान अपने गुणों को सार्थक करने के लिए अवतार लेते हैं। भगवान यदि बैकुंठ में ही बैठे रहे तो भगवान का छमा गुण व्यर्थ हो जाएगा क्योंकि बैकुंठ में कोई क्षमा का पात्र होता ही नहीं, वहां कोई अपराध नहीं करता, बैकुंठ में सभी जीव दिव्य गुण संपन्न होते हैं। बैकुंठ में रहने वाले जीव-आत्मा भी काम आदि विकारों से मुक्त होते हैं।

कथा व्यास में भगवान श्री राम के जन्मोत्सव का वर्णन करते हुए कहा कि भगवान के दिव्य स्वरूप का दर्शन करने हेतु उस समय जंगलों व कंदरा में न जाने कितने संत-महात्माओं ने अपनी समाधि का परित्याग कर दिया। क्योंकि जिस फल की प्राप्ति के लिए संत महात्मा समाधि में लीन थे उस फल की प्राप्ति तो रघुनंदन के स्वरूप दर्शन मात्र से ही संभव हो गया।

अयोध्या से बहुत दूर दूर की स्त्रियों ने जब सुना कि भगवान जन्मोत्सव मनाया जा रहा है तो बधाई देने के लिए अपने घर से उपहार की वस्तु लेकर गुनगुनाती हुई समूह में श्री दशरथ जी के महल की ओर निकल पड़ी। भगवान रघुनंदन श्री राम के जन्मोत्सव के समय दशरथ जी ने अपनी सारी संपत्ति अपनी प्रजा में लुटा दी। दान करने से पाप का नाश होता है। इस अवसर पर कथा व्यास ने 'बधाइयां बाजे आंगन' में सोहर का संगीतमय गायन किया।

भगवान के जन्मोत्सव के समय स्वर्ग लोक से न जाने कितने देवतागण अयोध्या में भगवान के दिव्य स्वरूप का दर्शन करने हेतु आए लेकिन दर्शन का लाभ उनको नहीं मिला इसलिए उस पवित्र धाम अयोध्या नगरी के प्रजाजनों द्वारा उठाई गई संपत्ति को ही स्मृति के रूप में देवताओं को ले जाना पड़ा।

कथा व्यास ने कहा कि रावण का मतलब रुदन है अर्थात जो रोवे और रूलावे वही रावण है और राम का अर्थ प्रसन्नता है, जो स्वयं प्रसन्न रहे और दूसरो को भी प्रसन्न करे।

जब मां कौशल्या ने रघुनंदन राम को देखा तो अनंत कोटि ब्रह्मांड उनके मुख्य मंडल में दिखाई देने लगे। एक-एक रूप में करोड़ों करोड़ों ब्रह्मांड का दर्शन होने लगा। जिस प्रकार एक वटवृक्ष के बीच में अनेक बीज समाहित होते हैं उसी प्रकार भगवान रघुनंदन श्रीराम में अनंत कोटि ब्रह्मांड समाया हुआ है। अनन्त ब्रह्माण्ड देखने का भाग्य, भगवान की अनुकंपा से ही भक्तजनों को प्राप्त होती है। जो भक्त माता कौशल्या जैसा भाव रखता है, भगवान स्वतः अपने दिव्य रूप का दर्शन उसे देते हैं।

जन्म के बाद के कथा को विस्तार करते हुए कथा व्यास ने कहा कि जब चारों भाई बड़े हो गए तो उन्होंने महर्षि वशिष्ठ ऋषि के आश्रम में सारी विद्याएं बहुत अल्पकाल में ही ग्रहण कर ली। क्योंकि गुरु की सेवा तथा आज्ञा से ही विद्या की प्राप्त होती है। यह चारों भाई गुरु की सेवा तथा आज्ञा में इतने तत्पर थे कि गुरु के कहने से पहले ही उनकी आज्ञा को शिरोधार्य कर दृढ़ संकल्प ले लिया करते थे।

कथा व्यास ने कहा कि भगवान श्री राम के राज्य में कृषि कार्य भी बिना मुहूर्त के नहीं होते थे कथा व्यास ने कहा कि उस समय घरों में माताएं यज्ञ किया करती थी, क्योंकि यज्ञ से ही सृष्टि की उत्पत्ति हुई।

कथा के बीच में कथा व्यास द्वारा अनेक भजन गाए गयें, जिस पर भक्तगण झूमते रहे। सम्पूर्ण कथा 'श्रीगोरखनाथ मन्दिर' के फेसबुक पेज एवं यूट्यूब चैनल के माध्यम से सजीव प्रसारण हुआ तथा कथा सभागार में 80 श्रद्धालुओं की बैठने की व्यवस्था थी और सोशल डिस्टेंसिंग को ध्यान में रखते हुए कथा का श्रवण किये।

कथा का समापन आरती एवं प्रसाद वितरण के साथ हुआ। संचालन डाॅ0 श्रीभगवान सिंह जी ने किया।कथा में गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, कालीबाड़ी के महंत रविन्द्र दास , योगी शांतिनाथ ,योगी धर्मेंद्र नाथ ,आचार्य शिवकांत ,यजमान श्री अजय कुमार सिंह , अरुण कुमार अग्रवाल ,विकास जालान ,महेश पोद्दार, डाॅ0 अरविन्द कुमार चतुर्वेदी आदि उपस्थित रहें।